महामृत्युंजय मंत्र

'ॐ त्र्यम्बकं यजामह
सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्
मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥'

हिन्दी दैनिक अखबार

झारखंड उत्कर्ष

रांची से प्रकाशित

उम्मीदों की उड़ान

रांची, बुधवार, 01 अप्रैल 2026 | मूल्य 4 रुपये | www.jharkhandutlkarsh.com | jharkhandutkarsh24@ gmail.com

बारह ज्योतिर्लिंग

सोमनाथ ज्योतिर्लिंग

मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग

महाकाल ज्योतिर्लिंग

ओंकार ज्योतिर्लिंग

केदारनाथ ज्योतिर्लिंग

भीमांशकर ज्योतिर्लिंग

विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग

त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग

वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग

नागेश ज्योतिर्लिंग

रामेश्वर ज्योतिर्लिंग

घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग

12 ज्योतिर्लिंग और उनकी विशेषता

सोमनाथ (गुजरात), मल्लिकार्जुन (आंध्र प्रदेश), महाकालेश्वर (मध्य प्रदेश), ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेश), केदारनाथ (उत्तराखंड), भीमाशंकर (महाराष्ट्र), विश्वनाथ (उत्तर प्रदेश), त्र्यंबकेश्वर (महाराष्ट्र), वैद्यनाथ (झारखंड), नागेश्वर (गुजरात), रामेश्वर (तमिलनाडु), घृष्णेश्वर (महाराष्ट्र)

1. सोमनाथ ज्योतिर्लिंग : सोमनाथ - गिर सोमनाथ, गुजरात, पहला पवित्र तीर्थस्थल

भारत का ही नहीं अपितु इस पृथ्वी का पहला ज्योतिर्लिंग माना जाता है, यह मंदिर गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित है। इस मंदिर के बारे में मान्यता है, कि जब चंद्रमा को दक्ष प्रजापति ने श्राप दिया था, तब चंद्रमा ने इसी स्थान पर तप कर इस श्राप से मुक्ति पाई थी। ऐसा भी कहा जाता है कि इस शिवलिंग की स्थापना स्वयं चन्द्र देव ने की थी, विदेशी आक्रमणों के कारण यह 17 बार नष्ट हो चुका है, हर बार यह बिगड़ता और बनता रहा है।

कथा- दक्ष प्रजापति की सत्ताइस कन्याएं थीं। उन सभी का विवाह चंद्रदेव के साथ हुआ था। किंतु चंद्रमा का समस्त अनुराग व प्रेम उनमें से केवल रोहिणी के प्रति ही रहता था। उनके इस कृत्य से दक्ष प्रजापति की अन्य कन्याएं बहुत अप्रसन्न रहती थीं। उन्होंने अपनी यह व्यथा-कथा अपने पिता को सुनाई। दक्ष प्रजापति ने इसके लिए चंद्रदेव को अनेक प्रकार से समझाया। किंतु रोहिणी के वशीभूत उनके हृदय पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अंततः दक्ष ने क्रोध होकर उन्हें 'क्षयग्रस्त' हो जाने का शाप दे दिया। इस शाप के कारण चंद्रदेव तत्काल क्षयग्रस्त हो गए। उनके क्षयग्रस्त होते ही पृथ्वी पर सुधा-शीतलता वर्षण का उनका सारा कार्य रुक गया। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई। चंद्रमा भी बहुत दुखी और चिंतित थे। उनकी प्रार्थना सुनकर इंद्रादि देवता तथा वसिष्ठ आदि ऋषिगण उनके उद्धार के लिए पितामह ब्रह्माजी के पास गए। सारी बातों को सुनकर ब्रह्माजी ने कहा- 'चंद्रमा अपने शाप-विमोचन के लिए अन्य देवों के साथ पवित्र प्रभासक्षेत्र में जाकर मृत्युंजय भगवान शिव की आराधना करें। उनकी कृपा से अवश्य ही इनका शाप नष्ट हो जाएगा और ये रोगमुक्त हो जाएंगे। उनके कथनानुसार चंद्रदेव ने मृत्युंजय भगवान की आराधना का सारा कार्य पूरा किया। उन्होंने घोर तपस्या करते हुए दस करोड़ बार मृत्युंजय मंत्र का जप किया। इससे प्रसन्न होकर मृत्युंजय-भगवान शिव ने उन्हें अमरत्व का वर प्रदान किया। उन्होंने कहा- 'चंद्रदेव! तुम शोक न करो। मेरे वर से तुम्हारा शाप-मोचन तो होगा ही, साथ ही साथ प्रजापति दक्ष के वचनों की रक्षा भी हो जाएगी।' कृष्ण पक्ष में प्रतिदिन तुम्हारी एक-एक कला क्षीण होगी, किंतु पुनः शुक्ल पक्ष में उसी क्रम से तुम्हारी एक-एक कला बढ़ जाया करेगी। इस प्रकार प्रत्येक पूर्णिमा को तुम्हें पूर्ण चंद्रत्व प्राप्त होता रहेगा।' चंद्रमा का एक नाम सोम भी है, उन्होंने भगवान शिव को ही अपना नाथ-स्वामी मानकर यहां तपस्या की थी। अतः इस ज्योतिर्लिंग को सोमनाथ कहा जाता है।

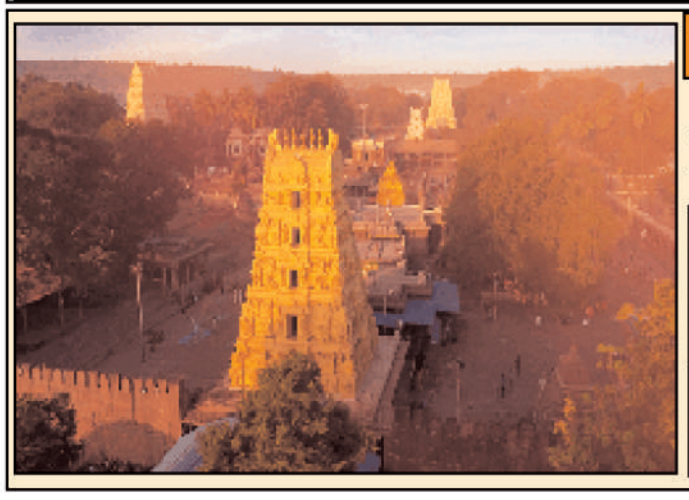

2. मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग : दक्षिण का कैलाश - भव्य मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग

आंध्रप्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल नाम के पर्वत पर स्थित है, इस मंदिर का महत्व भगवान शिव के कैलाश पर्वत के समान कहा गया है। अनेक धार्मिक शास्त्र इसके धार्मिक और पौराणिक महत्व की व्याख्या करते है, कहते हैं कि इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने मात्र से ही व्यक्ति को उसके सभी पापों से मुक्ति मिलती है। एक पौराणिक कथा के अनुसार जहां पर यह ज्योतिर्लिंग है, उस पर्वत पर आकर शिव का पूजन करने से व्यक्ति को अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य फल प्राप्त होते हैं।

कथा-एक समय की बात है, भगवान शंकरजी के दोनों पुत्र श्रीगणेश और श्रीकार्तिकेय स्वामी विवाह के लिए परस्पर झगड़ने लगे। प्रत्येक का आग्रह था कि पहले मेरा विवाह किया जाए। उन्हें लड़ते-झगड़ते देखकर भगवान शंकर और मां भवानी ने कहा- तुम लोगों में से जो पहले पूरी पृथ्वी का चक्कर लगाकर यहां वापस लौट आएगा उसी का विवाह पहले किया जाएगा।' माता-पिता की यह बात सुनकर श्रीकार्तिकेय स्वामी तो अपने वाहन मयूर पर विराजित हो तुरंत पृथ्वी-प्रदक्षिणा के लिए दौड़ पड़े। लेकिन गणेशजी के लिए तो यह कार्य बड़ा ही कठिन था। एक तो उनकी काया स्थूल थी, दूसरे उनका वाहन भी मूषक-चूहा था। भला, वे दौड़ में स्वामी कार्तिकेय की बराबरी किस प्रकार कर पाते लेकिन उनकी काया जितनी स्थूल थी बुद्धि उसी के अनुपात में सूक्ष्म और तीक्ष्ण थी। उन्होंने अविलंब पृथ्वी की परिक्रमा का एक सुगम उपाय खोज निकाला। सामने बैठे माता-पिता का पूजन करने के पश्चात उनकी सात प्रदक्षिणाएं करके उन्होंने पृथ्वी-प्रदक्षिणा का कार्य पूरा कर लिया। पूरी पृथ्वी का चक्कर लगाकर स्वामी कार्तिकेय जब तक लौटे तब तक गणेशजी का 'सिद्धि' और 'बुद्धि' नाम वाली दो कन्याओं के साथ विवाह हो चुका था और उन्हें 'क्षेम' तथा 'लाभ' नामक दो पुत्र भी प्राप्त हो चुके थे। यह सब देखकर स्वामी कार्तिकेय अत्यंत रुष्ट होकर क्रौंच पर्वत पर चले गए। माता पार्वती वहां उन्हें मनाने पहुंचीं। पीछे शंकर भगवान वहां पहुंचकर ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए और तब से मल्लिकार्जुन-ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रख्यात हुए। इनकी अर्चना सर्वप्रथम मल्लिका-पुष्पों से की गई थी। मल्लिकार्जुन नाम पड़ने का यही कारण है।

3. महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग : दिव्य आभा और प्राचीन विद्या - महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग

मध्यप्रदेश की धार्मिक राजधानी कही जाने वाली उज्जैन नगरी में स्थित है, महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग की विशेषता है कि ये एकमात्र दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है, यहां प्रतिदिन सुबह की जाने वाली भस्मारती विश्व भर में प्रसिद्ध है। महाकालेश्वर की पूजा विशेष रूप से आयु वृद्धि और आयु पर आए हुए संकट को टालने के लिए की जाती है, उज्जैनवासी मानते हैं कि भगवान महाकालेश्वर ही उनके राजा हैं और वे ही उज्जैन की रक्षा कर रहे हैं। यह मध्यप्रदेश राज्य के उज्जैन नगर में स्थित, महाकालेश्वर भगवान का प्रमुख मंदिर है। पुराणों, महाभारत और कालिदास जैसे महाकवियों की रचनाओं में इस मंदिर का मनोहर वर्णन मिलता है। स्वयंभू, भव्य और दक्षिणमुखी होने के कारण महाकालेश्वर महादेव की अत्यन्त पुण्यदायी महत्ता है। इसके दर्शन मात्र से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है, ऐसी मान्यता है। महाकवि कालिदास ने मेघदूत में उज्जयिनी की चर्चा करते हुए इस मंदिर की प्रशंसा की है। १२३५ ई. में इल्तुत्मिश के द्वारा इस प्राचीन मंदिर का विध्वंस किए जाने के बाद से यहां जो भी शासक रहे, उन्होंने इस मंदिर के जीर्णोद्धार और सौन्दर्यीकरण की ओर विशेष ध्यान दिया, इसीलिए मंदिर अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त कर सका है। प्रतिवर्ष और सिंहस्थ के पूर्व इस मंदिर को सुसज्जित किया जाता है।

कथा – इस ज्योतिर्लिंग के विषय में कथा इस प्रकार कही जाती है- किसी समय अवन्तिकापुरी में वेदपाठी तपोनिष्ठ एक अत्यंत तेजस्वी ब्राह्मण रहते थे। एक दिन दूषण नामक एक अत्याचारी असुर उनकी तपस्या में विघ्न डालने के लिए वहां आया। ब्रह्माजी से वर प्राप्तकर वह बहुत शक्तिशाली हो गया था। उसके अत्याचार से चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई थी। ब्राह्मण को कष्ट में पड़ा देखकर प्राणिमात्र का कल्याण करने वाले भगवान शंकर वहां प्रकट हो गए। उन्होंने एक हुंकार मात्र से उस दारुण अत्याचारी दानव को वहीं जलाकर भस्म कर दिया। भगवान वहां हुंकार सहित प्रकट हुए इसीलिए उनका नाम महाकाल पड़ गया। इसीलिए परम पवित्र ज्योतिर्लिंग को 'महाकाल' के नाम से जाना जाता है।

4. ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग : ओम का पवित्र द्वीप - मध्य प्रदेश में ओंकारेश्वर और ममलेश्वर मंदिर

मध्य प्रदेश के प्रसिद्ध शहर इंदौर के समीप स्थित है, जिस स्थान पर यह ज्योतिर्लिंग स्थित है, उस स्थान पर नर्मदा नदी बहती है और पहाड़ी के चारों ओर नदी बहने से यहां ॐ का आकार बनता है, ॐ शब्द की उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से हुई है। इसलिए किसी भी धार्मिक शास्त्र या वेदों का पाठ ॐ के साथ ही किया जाता है, यह ज्योतिर्लिंग ॐकार अर्थात ॐ का आकार लिए हुए है, इस कारण इसे ओंकारेश्वर नाम से जाना जाता है। यह ज्योतिर्लिंग मध्यप्रदेश में पवित्र नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। इस स्थान पर नर्मदा के दो धाराओं में विभक्त हो जाने से बीच में एक टापू-सा बन गया है। इस टापू को मान्धाता-पर्वत या शिवपुरी कहते हैं। नदी की एक धारा इस पर्वत के उत्तर और दूसरी दक्षिण होकर बहती है। दक्षिण वाली धारा ही मुख्य धारा मानी जाती है। यह ज्योतिर्लिंग नर्मदा नदी से घिरे एक द्वीप पर स्थित है, जो ओंकार (ॐ) के आकार का है, इसलिए इसका नाम ओंकारेश्वर पड़ा है. ममलेश्वर इसे अमलेश्वर के नाम से भी जाना जाता है, और यह ओंकारेश्वर के ठीक सामने नर्मदा के दूसरी तरफ स्थित है। इस ज्योतिर्लिंग-मंदिर के भीतर दो कोठरियों से होकर जाना पड़ता है। भीतर अँधेरा रहने के कारण यहां निरंतर प्रकाश जलता रहता है। ओंकारेश्वर लिंग मनुष्य निर्मित नहीं है। स्वयं प्रकृति ने इसका निर्माण किया है। इसके चारों ओर हमेशा जल भरा रहता है। संपूर्ण मान्धाता-पर्वत ही भगवान शिव का रूप माना जाता है। इसी कारण इसे शिवपुरी भी कहते हैं लोग भक्तिपूर्वक इसकी परिक्रमा करते हैं।

कथा – लिंग के दो स्वरूप होने की कथा पुराणों में इस प्रकार दी गई है- एक बार विन्ध्यपर्वत ने पार्थिव-अर्चना के साथ भगवान शिव की छः मास तक कठिन उपासना की। उनकी इस उपासना से प्रसन्न होकर भूतभावन शंकरजी वहां प्रकट हुए। उन्होंने विन्ध्य को उनके मनोवांछित वर प्रदान किए। विन्ध्याचल की इस वर-प्राप्ति के अवसर पर वहां बहुत से ऋषिगण और मुनि भी पधारे। उनकी प्रार्थना पर शिवजी ने अपने ओंकारेश्वर नामक लिंग के दो भाग किए। एक का नाम ओंकारेश्वर और दूसरे का अमलेश्वर पड़ा। दोनों लिंगों का स्थान और मंदिर पृथक होते भी दोनों की सत्ता और स्वरूप एक ही माना गया है।

5. केदारनाथ ज्योतिर्लिंग : पवित्र शिखर - उत्तराखंड में केदारनाथ ज्योतिर्लिंग

केदारनाथ ज्योतिर्लिंग स्थित ज्योतिर्लिंग उत्तराखंड में स्थित है, बाबा केदारनाथ का मंदिर बद्रीनाथ के मार्ग में स्थित है, केदारनाथ का वर्णन स्कन्द पुराण एवं शिव पुराण में भी मिलता है। यह तीर्थ भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है, जिस प्रकार कैलाश का महत्व है उसी प्रकार का महत्व शिव जी ने केदार क्षेत्र को भी दिया है।

कथा – महाभारत युद्ध के बाद पांडवों पर अपने भाइयों और सगे-संबंधियों की हत्या का दोष लगा था। भगवान कृष्ण ने उन्हें भगवान शिव से क्षमा मांगने का सुझाव दिया, लेकिन शिवजी उनसे नाराज थे। पांडवों से बचने के लिए, शिवजी ने बैल का रूप धारण किया और पहाड़ों में मवेशियों के बीच छिप गए। भीम ने उन्हें पहचान लिया और उन्हें पकड़ने की कोशिश की। जब शिवजी ने वहां से जाने की कोशिश की, तो भीम ने उन्हें रोक लिया और शिवजी को उन्हें क्षमा करना पड़ा। मान्यता है कि जिस स्थान पर पांडव शंकर जी से मिले थे, वह स्थान गुप्त काशी के रूप में जाना जाता है। इसके बाद शिवजी 5 सिद्ध रूपों में प्रकट हुए, जिन्हें पंचकेदार के नाम से जाना जाता है।

केदारनाथ में उनका पृष्ठभाग (कूल्हे), रुद्रनाथ में मुख, तुंगनाथ में हाथ, मध्यमहेश्वर में नाभि और कल्पेश्वर में जटाएं प्रकट हुईं। केदारनाथ मंदिर का निर्माण पांडवों द्वारा कराया गया था, और यह मंदिर हिमालय क्षेत्र में स्थित है। यह मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है और इसे भगवान शिव के 11वें ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजा जाता है।

6. भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग: पवित्र जंगल - महाराष्ट्र की प्राकृतिक सुंदरता के बीच भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग

महाराष्ट्र के पुणे जिले में सह्याद्रि नामक पर्वत पर स्थित है, भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग को मोटेश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर के विषय में मान्यता है कि जो भक्त श्रद्धा से इस मंदिर का दर्शन प्रतिदिन सुबह सूर्य निकलने के बाद करता है, उसके सात जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं तथा उसके लिए स्वर्ग के मार्ग खुल जाते हैं।

कथा – पौराणिक कथा के अनुसार, रावण के भाई कुंभकर्ण की पत्नी कर्कटी सह्याद्रि पर्वत पर रहती थी. वहां, कुंभकर्ण और कर्कटी का पुत्र भीम का जन्म हुआ। महाबली राक्षस, राक्षसराज रावण के छोटे भाई कुंभकर्ण का पुत्र था। लेकिन उसने अपने पिता को कभी देखा न था। उसके होश संभालने के पूर्व ही भगवान राम के द्वारा कुंभकर्ण का वध कर दिया गया था। जब वह युवावस्था को प्राप्त हुआ तब उसकी माता ने उससे सारी बातें बताईं। भगवान विष्णु के अवतार श्रीरामचंद्रजी द्वारा अपने पिता के वध की बात सुनकर वह महाबली राक्षस अत्यंत संतप्त और क्रुद्ध हो उठा। अब वह निरंतर भगवान श्री हरि के वध का उपाय सोचने लगा। उसने अपने अभीष्ट की प्राप्ति के लिए एक हजार वर्ष तक कठिन तपस्या की। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने उसे लोक विजयी होने का वर दे दिया। भीम बहुत शक्तिशाली था और उसने देवताओं को परेशान करना शुरू कर दिया. उसने कामरूप के राजा, जो शिव भक्त था, पर भी आक्रमण किया. राजा ने भगवान शिव से मदद मांगी, और भगवान शिव ने भीम के साथ युद्ध किया। युद्ध में, भगवान शिव ने भीम को हरा दिया और उसे मार डाला. देवताओं ने भगवान शिव से उस स्थान पर ज्योतिर्लिंग के रूप में रहने का आग्रह किया. भगवान शिव ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और ज्योतिर्लिंग के रूप में वहां स्थापित हो गए, उस ज्योतिर्लिंग को भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग के रूप में जाना जाता है।

7. विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग : दिव्यता की अखंड ज्योति - वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर

काशी नामक स्थान पर स्थित है, काशी सभी धर्म स्थलों में सबसे अधिक महत्व रखती है, इसलिए सभी धर्म स्थलों में काशी का अत्यधिक महत्व कहा गया है। इस स्थान की मान्यता है कि प्रलय आने पर भी यह स्थान बना रहेगा, इसकी रक्षा के लिए भगवान शिव इस स्थान को अपने त्रिशूल पर धारण कर लेंगे और प्रलय के टल जाने पर काशी को उसके स्थान पर पुनः रख देंगे।

कथा – काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग की कथा बहुत प्रसिद्ध है। यह कथा भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह के बाद काशी में उनके निवास से जुड़ी है। एक कथा के अनुसार, भगवान शिव और माता पार्वती जब कैलाश पर्वत पर रहते थे, तब माता पार्वती ने भगवान शिव से एक ऐसे स्थान पर निवास करने का आग्रह किया जहां भक्त आसानी से उनकी पूजा कर सकें। इसके बाद, भगवान शिव ने काशी को अपने निवास के रूप में चुना और यहां ज्योतिर्लिंग के रूप में स्वयं को स्थापित किया। यह ज्योतिर्लिंग काशी विश्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध है।

काशी कथा में शामिल हैं: पौराणिक कथाएं काशी की उत्पत्ति, भगवान शिव का काशी से संबंध, और काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग की स्थापना से जुड़ी कथाएं। ऐतिहासिक कथाएं काशी पर हुए आक्रमण, मंदिर का पुनर्निर्माण, और काशी के विकास से जुड़ी कहानियां। सांस्कृतिक कथाएं काशी की संस्कृति, धार्मिक महत्व, और काशी के लोगों के जीवन से जुड़ी कहानियां। काशी कथा के कुछ मुख्य पहलू: काशी का निर्माण: पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव ने काशी नगर की स्थापना की और इसे अपना निवास स्थान बनाया। काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग: यह मंदिर भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है और काशी का सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। काशी का महत्व: काशी को मोक्ष की नगरी माना जाता है, जहां मृत्यु होने पर व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है। काशी का सांस्कृतिक महत्व: काशी एक प्राचीन और समृद्ध सांस्कृतिक केंद्र है.

12 ज्योतिर्लिंग और उनकी विशेषता

सोमनाथ (गुजरात), मल्लिकार्जुन (आंध्र प्रदेश), महाकालेश्वर (मध्य प्रदेश), ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेश), केदारनाथ (उत्तराखंड), भीमाशंकर (महाराष्ट्र), विश्वनाथ (उत्तर प्रदेश), त्र्यंबकेश्वर (महाराष्ट्र), वैद्यनाथ (झारखंड), नागेश्वर (गुजरात), रामेश्वर (तमिलनाडु), घृष्णेश्वर (महाराष्ट्र)

8. त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग : नासिक में त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग का दिव्य वैभव

गोदावरी नदी के करीब महाराष्ट्र राज्य के नासिक जिले में स्थित है, इस ज्योतिर्लिंग के सबसे अधिक निकट ब्रह्मागिरि नाम का पर्वत है। इसी पर्वत से गोदावरी नदी शुरू होती है, भगवान शिव का एक नाम त्र्यंबकेश्वर भी है, कहा जाता है कि भगवान शिव को गौतम ऋषि और गोदावरी नदी के आग्रह पर यहां ज्योतिर्लिंग रूप में रहना पड़ा।

कथा– त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग की कथा महाराष्ट्र के नासिक जिले में स्थित त्र्यंबकेश्वर मंदिर से जुड़ी है। पौराणिक कथा के अनुसार, गौतम ऋषि अपने आश्रम में रहते थे, लेकिन कुछ ऋषियों ने उनसे ईर्ष्या की और उन पर गौहत्या का झूठा आरोप लगाया. गौतम ऋषि ने इस पाप से मुक्ति पाने के लिए भगवान शिव की कठोर तपस्या की, जिसके परिणामस्वरूप भगवान शिव और देवी पार्वती प्रकट हुए, गौतम ऋषि ने भगवान शिव से गंगा को पृथ्वी पर लाने का वरदान मांगा, लेकिन गंगा ने कहा कि वह तभी आएंगी जब भगवान शिव भी वहां रहेंगे. गौतम ऋषि की प्रार्थना से प्रसन्न होकर, भगवान शिव ने त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग के रूप में वहां निवास करने का फैसला किया, और गंगा नदी को गोदावरी के रूप में जाना जाने लगा.

त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग की विशेषताएं त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग की मुख्य विशेषता यह है कि यहां ज्योतिर्लिंग में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवों के प्रतीक स्वरूप विद्यमान हैं, जो इसे अन्य ज्योतिर्लिंगों से अलग बनाता है। त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग, महाराष्ट्र के नासिक जिले में स्थित है। यह मंदिर गोदावरी नदी के किनारे स्थित है और ब्रह्मगिरि पर्वत के पास है, जहां से गोदावरी नदी का उद्गम होता है.

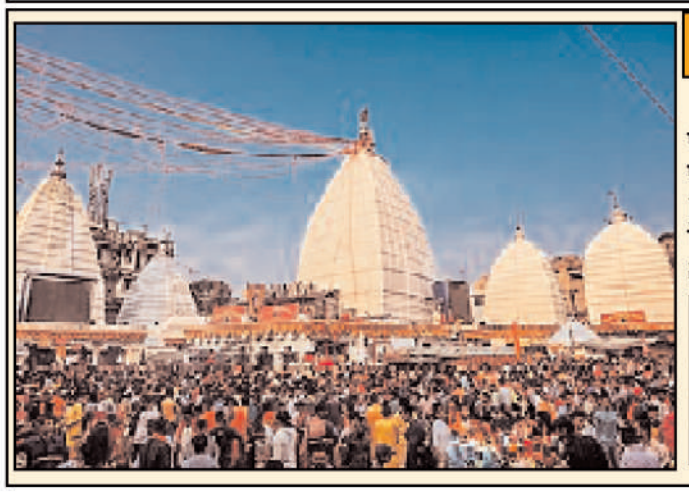

9. श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग : उपचार का पवित्र स्थान - झारखंड में श्रद्धेय वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग

श्री वैद्यनाथ शिवलिंग का समस्त ज्योतिर्लिंगों की गणना में नौवां स्थान बताया गया है, भगवान श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग का मन्दिर जिस स्थान पर अवस्थित है, उसे वैद्यनाथ धाम कहा जाता है झारखंड के देवघर स्थित प्रसिद्ध तीर्थस्थल वैद्यनाथ धाम में स्थापित शिवलिंग द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से नौवां ज्योतिर्लिंग है। यह देश का पहला ऐसा स्थान है जो ज्योतिर्लिंग के साथ ही शक्तिपीठ भी है। वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग की स्थापना स्वयं भगवान विष्णु ने की है। इस स्थान के कई नाम प्रचलित हैं जैसे हरितकी वन, चिताभूमि, रावणेश्वर कानन, हार्दपीठ और कामना लिंग। कहा जाता है इस ज्योतिर्लिंग की एक सबसे बड़ी खासियत है कि यह विश्व का इकलौता शिव मंदिर है, जहां शिव और शक्ति एक साथ विराजमान हैं।मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसके सिर पर त्रिशूल नहीं पंचशूल है. जिसे मंदिर का सुरक्षा कवच माना गया है. देश में सिर्फ देवघर मंदिर के शिखर पर ही पंचशूल होने का दावा किया जाता है. वैद्यनाथ धाम का यह पंचशूल रहस्यों से भरा है. पंचशूल में पांच तत्व- पृथ्वी, जल, आग, आकाश और वायु जबकि त्रिशूल में तीन तत्व- वायु, जल और अग्नि है.

कथा- पौराणिक कथाओं के अनुसार, रावण भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए हिमालय पर तपस्या कर रहा था। उसने एक-एक करके अपने नौ सिर काटकर शिवलिंग पर चढ़ा दिए। जब वह दसवां सिर चढ़ाने वाला था, तो शिवजी प्रकट हुए और उसे वरदान मांगने को कहा. रावण ने कामना लिंग को लंका ले जाने का वरदान मांगा। शिवजी ने शर्त रखी कि यदि वह रास्ते में कहीं भी लिंग को रखेगा तो वह वहीं स्थापित हो जाएगा। रावण शिवलिंग को लेकर जा रहा था, तभी उसे लघुशंका लगी और उसने एक ग्वाले को शिवलिंग सौंप दिया और लघुशंका करने चला गया। ग्वाले ने शिवलिंग को वहीं स्थापित कर दिया जब रावण शिवलिंग को उठाने गया, तो वह उसे हिला भी नहीं पाया। इस प्रकार, शिवलिंग वहीं स्थापित हो गया और वह लिंग वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

10. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग : भक्ति के संरक्षक - रहस्यमय नागेश्वर ज्योतिर्लिंग

गुजरात के बाहरी क्षेत्र में द्वारिका स्थान में स्थित है, धर्म शास्त्रों में भगवान शिव नागों के देवता है और नागेश्वर का पूर्ण अर्थ नागों का ईश्वर है, भगवान शिव का एक अन्य नाम नागेश्वर भी है। इस ज्योतिर्लिंग की महिमा में कहा गया है कि जो व्यक्ति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ यहां दर्शन के लिए आता है उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती है।

कथा- एक समय की बात है, दारुका नामक एक बलशाली राक्षस था। उसने भगवान शिव की आराधना करके उनसे वरदान प्राप्त किया था कि वह दारुका वन में किसी भी स्त्री को प्रवेश करने से रोक सकता है। दारुका ने इस वरदान का दुरुपयोग करते हुए, शिव भक्तों को भी उस वन में प्रवेश करने से रोकना शुरू कर दिया। एक बार, दारुका ने शिव भक्त सुप्रिया को बंदी बना लिया और उसे अपने कारागार में डाल दिया.
सुप्रिया, भगवान शिव का परम भक्त था। कारागार में रहते हुए, उसने भगवान शिव की स्तुति की और उनसे अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर, भगवान शिव प्रकट हुए और दारुका राक्षस का वध किया। इसके बाद, भगवान शिव ने उसी स्थान पर ज्योतिर्लिंग के रूप में वास किया, जो नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रसिद्ध हुआ. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग, भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह गुजरात के द्वारका शहर के पास स्थित है.

विशेषताएं: विष से मुक्ति:मान्यता है कि यहां पूजा करने से विष, सर्पदंश और सांसारिक मोह से मुक्ति मिलती है, दक्षिणमुखी शिवलिंग:यह ज्योतिर्लिंग अन्य नागेश्वर मंदिरों के विपरीत दक्षिणमुखी है,25 मीटर ऊंची शिव प्रतिमा:मंदिर परिसर में भगवान शिव की 25 मीटर ऊंची पद्मासन मुद्रा में बैठी हुई मूर्ति स्थापित है द्वारका का रक्षक: इसे 'द्वारका का रक्षक' भी कहा जाता है, चारों धामों के पास:यह मंदिर द्वारका धाम के पास स्थित है, जो भगवान कृष्ण की अवतार स्थली है, नाग दोषों से मुक्ति:यहां दर्शन करने से नाग दोषों से मुक्ति मिलती है. शिव पुराण में उल्लेख:शिव पुराण में इस ज्योतिर्लिंग का उल्लेख है

11. रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग : दिव्य यात्रा - रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग की आध्यात्मिक महिमा

रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग तमिलनाडु राज्य के रामनाथपुरं नामक स्थान में स्थित है, इस ज्योतिर्लिंग के विषय में यह मान्यता है कि इसकी स्थापना स्वयं भगवान श्रीराम ने की थी। भगवान राम के द्वारा स्थापित होने के कारण ही इस ज्योतिर्लिंग को भगवान राम का नाम रामेश्वरम दिया गया है।

रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग की स्थापना की कथा इस प्रकार है:
1. रावण वध के बाद:
रावण को मारने के बाद, भगवान राम लंका से वापस आए। ऋषियों ने उन्हें ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त होने के लिए शिवलिंग स्थापित करने और पूजा करने की सलाह दी.
2. हनुमान जी को शिवलिंग लाने भेजा:
भगवान राम ने हनुमान जी को कैलाश पर्वत से शिवलिंग लाने के लिए भेजा.
3. सीता द्वारा बालू के शिवलिंग की स्थापना:
हनुमान जी को शिवलिंग लाने में देर हो रही थी, इसलिए माता सीता ने समुद्र तट पर रेत से शिवलिंग बनाया और भगवान राम ने उसकी पूजा की.
4. हनुमान जी द्वारा लाए गए शिवलिंग की स्थापना:
बाद में, हनुमान जी भी कैलाश से शिवलिंग लेकर आए। उस शिवलिंग को भी वहीं स्थापित किया गया.
5. रामेश्वरम नाम:
भगवान राम द्वारा स्थापित शिवलिंग को रामेश्वरम कहा गया, क्योंकि वह राम द्वारा स्थापित ईश्वर था.
6. रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग:
रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है.
इस प्रकार, रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग भगवान राम की भक्ति और शिव-पार्वती की कृपा का प्रतीक है.

12. घृष्णेश्वर महादेव ज्योतिर्लिंग : आस्था का दिव्य तीर्थस्थान - औरंगाबाद में घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग

घृष्णेश्वर महादेव का प्रसिद्ध मंदिर महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर के समीप दौलताबाद के पास स्थित है, इसे घृष्णेश्वर या घुश्मेश्वर के नाम से भी जाना जाता है, दूर-दूर से लोग यहां दर्शन के लिए आते हैं और आत्मिक शांति प्राप्त करते हैं'

कथा– दक्षिण देश में देवगिरिपर्वत के निकट सुधर्मा नामक एक अत्यंत तेजस्वी तपोनिष्ठ ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी का नाम सुदेहा था दोनों में परस्पर बहुत प्रेम था। किसी प्रकार का कोई कष्ट उन्हें नहीं था लेकिन उन्हें कोई संतान नहीं थी। ज्योतिष-गणना से पता चला कि सुदेहा के गर्भ से संतानोत्पत्ति हो ही नहीं सकती। सुदेहा संतान की बहुत ही इच्छुक थी। उसने सुधर्मा से अपनी छोटी बहन से दूसरा विवाह करने का आग्रह किया। पहले तो सुधर्मा को यह बात नहीं जंची। लेकिन अंत में उन्हें पत्नी की जिद के आगे झुकना ही पड़ा। वे अपनी पत्नी की छोटी बहन घुश्मा को ब्याह कर घर ले आए। घुश्मा अत्यंत विनीत और सदाचारिणी स्त्री थी। वह भभगवान शिव की अनन्य भक्ता थी। प्रतिदिन एक सौ एक पार्थिव शिवलिंग बनाकर हृदय की सच्ची निष्ठा के साथ उनका पूजन करती थी।भगवान शिवजी की कृपा से थोड़े ही दिन बाद उसके गर्भ से अत्यंत सुंदर और स्वस्थ बालक ने जन्म लिया। बच्चे के जन्म से सुदेहा और घुश्मा दोनों के ही आनंद का पार न रहा। दोनों के दिन बड़े आराम से बीत रहे थे। लेकिन न जाने कैसे थोड़े ही दिनों बाद सुदेहा के मन में एक कुविचार ने जन्म ले लिया। वह सोचने लगी, मेरा तो इस घर में कुछ है नहीं। सब कुछ घुश्मा का है। पूरे घर में कुहराम मच गया। सुधर्मा और उसकी पुत्रवधू दोनों सिर पीटकर फूट-फूटकर रोने लगे। लेकिन घुश्मा नित्य की भांति भगवान शिव की आराधना में तल्लीन रही। जैसे कुछ हुआ ही न हो। पूजा समाप्त करने के बाद वह पार्थिव शिवलिंगों को तालाब में छोड़ने के लिए चल पड़ी। जब वह तालाब से लौटने लगी उसी समय उसका प्यारा लाल तालाब के भीतर से निकलकर आता हुआ दिखलाई पड़ा। वह सदा की भांति आकर घुश्मा के चरणों पर गिर पड़ा। इसी समय भगवान शिव भी वहां प्रकट होकर घुश्मा से वर मांगने को कहने लगे। वह सुदेहा की घनौनी करतूत से अत्यंत क्रुद्ध हो उठे थे। अपने त्रिशूल द्वारा उसका गला काटने को उद्यत दिखलाई दे रहे थे। घुश्मा ने हाथ जोड़कर भगवान शिव से कहा- 'प्रभो! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरी उस अभागिन बहन को क्षमा कर दें। निश्चित ही उसने अत्यंत जघन्य पाप किया है किंतु आपकी दया से मुझे मेरा पुत्र वापस मिल गया। मेरी एक प्रार्थना और है, लोक-कल्याण के लिए आप इस स्थान पर सर्वदा के लिए निवास करें।' भगवान शिव ने उसकी ये दोनों बातें स्वीकार कर ली। ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट होकर वह वहीं निवास करने लगे। सती शिवभक्त घुश्मा के आराध्य होने के कारण वे यहां घुश्मेश्वर महादेव के नाम से विख्यात हुए।

12 ज्योतिर्लिंग